अत्यंत गोपनीय केवल आंतरिक एवं सीमित प्रयोग हेतु

अंक-योजना

विषय- हिंदी

कक्षा - दसवीं

सामान्य निर्देश :-

1. परीक्षार्थियों के सही और उचित आकलन के लिए उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। मूल्यांकन में एक छोटी-सी त्रुटि भी गंभीर समस्या को जन्म दे सकती है, जो परीक्षार्थियों के भविष्य, शिक्षा प्रणाली और अध्यापन-व्यवस्था को भी प्रभावित कर सकती है। इससे बचने के लिए अनुरोध किया जाता है कि मूल्यांकन प्रारंभ करने से पूर्व ही आप मूल्यांकन निर्देशों को पढ़ और समझ लें।
2. योग्यता आधारित प्रश्नों का मूल्यांकन करते समय कृपया दिए गए उत्तरों को समझे, भले ही उत्तर मार्किंग स्कीम में न हो, छात्रों को उनकी योग्यता के आधार पर अंक दिए जाने चाहिए।
3. अंक योजना में उत्तरों के लिए केवल सुझाए गए मान बिंदु होते हैं। ये केवल दिशा-निर्देशों की प्रकृति के हैंऔर पूर्ण नहीं हैं। यदि परीक्षार्थियों की अभिव्यक्ति सही है तो उसके अनुसार नियत अंक दिए जाने चाहिए।
4. परीक्षक सही उत्तर पर सही का चिहन (√) लगाएँ और गलत उत्तर पर गलत का (×)मूल्यांकनकर्ता द्वारा ये चिहन न लगाने से ऐसा समझ में आता है कि उत्तर सही है, परंतु उस पर अंक नहीं दिए गए।
5. यदि किसी प्रश्न के उपभाग हो तो कृपया प्रश्नों के उपभागों के उत्तरों पर दायी ओर अंक दिए जाएँ। बाद में इन उपभागों के अंकों का योग बायाँ और के हाशिये में लिखकर उसे गोलाकृत कर दिया जाए।
6. यदि किसी प्रश्न के कोई उपभाग न हो तो बायीं ओर के हाशिये में अंक दिए जाएँ और उन्हें गोलाकृत कियाजाए।
7. यदि परीक्षार्थी ने किसी प्रश्न का उत्तर दो स्थानों पर लिख दिया है और किसी को काटा नहीं है तो जिस उत्तर पर अधिक अंक प्राप्त हो रहे हो, उस पर अंक दें और दूसरे को काट दें। यदि परीक्षार्थी ने अतिरिक्त प्रश्न/प्रश्नों का उत्तर दे दिया है तो जिन उत्तरों पर अधिक अंक प्राप्त हो रहे हो, उन्हें ही स्वीकार करे, उन्हीं पर अंक है।
8. एक ही प्रकार की अशुद्धि बार-बार हो तो उसे अनदेखा करें और उस पर हर बार अंक न काटे जाएँ।
9. यहाँ यह ध्यान रखना होगा कि मूल्यांकन में पूर्ण अंक पैमाना 0-80 (उदाहरण 0-80 अंक जैसा कि प्रश्न में दिया गया है) का प्रयोग अभीष्ट है, अर्थात परीक्षार्थी ने यदि सभी अपेक्षित उत्तर-बिंदुओं का उल्लेख किया है तो उसे पूरे अंक देने में संकोच न करें।
10. ये सुनिश्चित करें कि उत्तर पुस्तिका के अंदर दिए गए अंकों का आवरण के अंकों के साथ मिलान हो।
11. आवरण पृष्ठ पर दो स्तंभों के अंकों का योग जाँच लें ।
12. उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए यदि कोई उत्तर पूर्ण रूप से गलत हो तो उस पर (x) निशान लगाएँऔर शून्य (0) अंक दें।
13. उत्तर पुस्तिका में किसी प्रश्न का बिना जाँचे हुए छूट जाना या योग में किसी भूल का पता लगना, मूल्यांकनसमिति के सभी लोगों की छवि को और बोर्ड की प्रतिष्ठा को धूमिल करता है।परीक्षक

सुनिश्चित करें कि सभी उत्तरों का मूल्यांकन हुआ है। आवरण पृष्ठ पर तथा योग में कोई अशुद्धि नहीं रह गई है तथा कुल योग को शब्दों और अंकों में लिखा गया है।
उपर्युक्त मूल्यांकन निर्देश उत्तर-पुस्तिकाओं की जाँच हेतु आदेश नहीं अपितु केवल निर्देश हैं। यदि इन मूल्यांकन निर्देशों में किसी प्रकार की त्रुटि हो, किसी प्रश्न का उत्तर स्पष्ट न हो, अंक योजना में दिए गए उत्तर से अतिरिक्त कोई और भी उत्तर सही हो, तो परीक्षक अपने विवेकानुसार उस प्रश्न का मूल्यांकनकरे।

अंक-योजना

विषय- हिंदी

कक्षा - दसवीं

कोड-A

कक्षा : दसवीं अधिकतम अंक 80

सामान्य निर्देश :-

1. अंक योजना का उद्देश्य मूल्यांकनको अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है।
2. वर्णनात्मक प्रश्नों के अंक योजना में दिए गए उत्तर बिंदु अंतिम नहीं है बल्कि ये सुझावात्मक एवम् सांकेतिक हैं।
3. यदि परीक्षार्थी इन सांकेतिक बिंदुओं से भिन्न , किन्तु उपयुक्त उत्तर है, तो उन्हें अंक दिए जाएँ।
4. मूल्यांकन कार्य निजी व्याख्या के अनुसार नहीं बल्कि अंक योजना में दिए गए निर्देशानुसार ही किया जाए।

खंड -क

प्रश्न- संख्या उत्तर अंक विभाजन

प्रश्न-1 व्याकरण एवम् रचना पर आधारित प्रश्नों के उत्तर : 1x7=7

क. iv. बहुव्रीहि समास

ख. ii. दीर्घ संधि

ग. iii. दिन

घ. ii. विष

ङ. ii. अति

च. iii. इक

छ. i. निर्लज्ज व्यक्ति

प्रश्न 2 निम्नलिखित प्रश्नों के यथानिर्दिष्ट उत्तर दीजिए। 2x4=8 अंक

क) चौपाई एक मात्रिकसम छंद है इसके प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राएं होती हैं ।चरण के अंत में जगण तथा तगण नहीं आने चाहिए समकल के बाद समकल और विषम कल के बाद विषम कल आना चाहिए।

जैसे -रघुकुल रीत सदा चलि आई प्राण जाए पर वचन न जाई

यही क्षत्रिय धर्म है भाई

अपने कुल की रीत निभाई

ख) एक से अधिक वर्णों के मिलने से जो सार्थक वर्ण-समूह बनता है वह शब्द कहलाता हैं। जैसे-सोहन, खीर, मीरा, खेलता। जब किसी भी प्रकार का सार्थक शब्द वाक्य में प्रयुक्त होता है तब वह पद कहलाता है।

ग) जहां किसी व्यक्ति या वस्तु की लोक प्रसिद्ध व्यक्ति या वस्तु से तुलना की जाती है वहां उपमा अलंकार होता है। जैसे हाय! फूल सी कोमल बच्ची हुई राख की थी ढेरी।

घ) अविकारी शब्द : जिन शब्दों का रूप-परिवर्तन होता है। वे अविकारी शब्द कहलाते हैं। जैसे कल ,वाह!,परसों ,तो , जब, अरे आदि । क्रिया विशेषण, संबंध बोधक, समुच्चयबोधक विस्मयादिबोधक और निपात अविकारी शब्दों में आते हैं।

प्रश्न- 3 किसी एक विषय पर निबंध 5 अंक

क) भूमिका 1

ख) विस्तार + निर्धारित शब्द सीमा 3

ग) उपसंहार 1

प्रश्न- 4 पत्र लेखन 5 अंक

क) आरंभ और अंत की औपचारिकताएं 1

ख) विषय वस्तु 3

ग) भाषा 1

खंड - ख (क्षितिज काव्य खंड)

प्रश्न- 5 बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर **6 अंक**

क iii. प्रजा 1

ख i. बालकाण्ड 1

ग ii. शेफालिका 1

घ ii. बिजली 1

ड़. i. हाथों की 1

च i. बचपन 1

प्रश्न- 6 काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर **(5)**

i. कवि - सूरदास , कविता - सूरदास के पद 1

ii. प्रस्तुत पद हिंदी की पाठ्य पुस्तक क्षितिज भाग- 2 में संकलित एवं सूरदास के पदों से लिया गया है । 1

iii. कड़वी ककड़ी के समान 1

iv. ज्यों करुई ककरी 1

v. चंचल, अस्थिर। 1

प्रश्न- 7 काव्य-सौंदर्य - **(3)**

(i) भाव सौंदर्य 1½

(ii) शिल्प सौंदर्य 1½

भाव -यहां कवि स्पष्ट करता है कि परशुराम बड़े क्रोधित थे और छोटी-छोटी बातों पर क्रोधित होते थे उनकी वाणी अंगारों की वर्षा करती थी।

शिल्प - भाषा - अवधी

छंद - दोहा

अलंकार -अतिशयोक्ति अलंकार

व्यंजना- शब्द शक्ति,

वीर रस, ओज गुणका प्रयोग हुआ है।

प्रश्न- 8 प्रश्नों के उत्तर **3+3= 6 अंक**

(क). **कवि अपने जीवन में किसी के प्रति किए गए प्रेमभाव को जग जाहिर नहीं करना चाहता था। वह नहीं चाहता था कि जिस प्रेम के सुख को उसने पाया ही नहीं और जिसका केवल सपना-भर देखा उसे दूसरों के सामने प्रकट करे। वह प्रेम तो उसकी स्मृतियों का सहारा था जो उसे जीने की प्रेरणा देता था।**

(ख). गोपियों के अनुसार राजा का धर्म तो यह होना चाहिए कि वह किसी भी दशा में प्रजा को न सताए। वह के सुख-चैन का ध्यान रखे।

प्रश्न- 9 क्षितिज (गद्य -खंड) के आधार पर निम्नलिखि बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर (6)

क. (iv) हालदार 1

ख (i) कार्तिक 1

घ (iii) कनफटी 1

ड़ (iv) भानपुरा 1

च. (ii) शहनाई 1

छ (i) लेनिन 1

प्रश्न- 10. गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर (5)

(i) पाठ -बालगोबिन भगत , लेखक -रामवृक्ष बेनीपुरी 1

(ii) भादो की 1

(iii) झिल्ली की 1

(iv) बाल गोविंद भगत का गाना। 1

(v) गोदी में पियवा,चमक उठे सखियां, 1

प्रश्न-11 लेखक/लेखिका परिचय 5

क) जीवन परिचय 1

ख) प्रमुख रचनाएँ 1

ग) साहित्यिक विशेषताएँ 1½

घ) भाषा -शैली 1½

प्रश्न- 12. प्रश्नों के उत्तर 2+2 =4 अंक

(क) यह टिप्पणी उसकी संकीर्ण मानसिकता को व्यक्त करती है उसके मन में देशभक्ति का आदर करने वालों के प्रति सम्मान की भावना नहीं थी,उसे कैप्टन पर व्यंग्य करने की अपेक्षा उसके प्रति आदर भाव रखना चाहिए था। जो व्यक्ति नेताजी की प्रतिमा में कोई कमी नहीं देख सकता ऐसे व्यक्ति की शारीरिक कमियों की तरफ ध्यान न देकर उसकी भावनाओं की कदर करनी चाहिए। यह टिप्पणी दुर्भाग्यपूर्ण है उसे ऐसा नहीं करना चाहिए था।

(ख) लेखिका मन्नू भंडारी ने अपूर्व उत्साह दिखाया, अपने पिता की इच्छा के विरुद्ध सड़कों पर घूम-घूम कर नारेबाजी की, भाषण दिया ,हड़ताल की ,जलसे -जुलूस निकाले। उसके इशारे पर पूरा कॉलेज कक्षाएं छोड़कर आंदोलन में साथ हो लेता था ।

खंड - घ (कृतिका भाग -2)

प्रश्न-13. कृतिका भाग -2 के आधार पर किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर 3+2+2= 7अंक

(क) माता का आंचल पाठ में लेखक की बाल्यावस्था का अत्यंत आकर्षक रूप में चित्रण किया गया है ।लेखक ने बताया है कि उसे अपने माता-पिता का भरपूर स्नेह मिला है। बचपन में कितनी निश्चित और भोलापन होता है। इसका साक्षात रूप पाठ में देखने को मिलता है। बच्चे अपने खेल में तल्लीन होकर खेलते हैं ।वहां किसी प्रकार का भेदभाव घृणा, जलन का भाव नहीं होता

।बच्चों की दुनिया की संजीव तस्वीर अंकित करना लेखक का प्रमुख लक्ष्य रहा है। जिसमें उसे पूर्ण सफलता भी मिली है।

अथवा

उत्तर:- गंतोक को मेहनतकश बादशाहों का शहर इसलिए कहा गया है क्योंकि यहां के लोग बहुत मेहनत करते हैं और अपनी जीविका कमाने के लिए संघर्ष करते हैं, भले उनके पास संसाधन कम हो । गंतोक की भौगोलिक स्थिति और आर्थिक गतिविधियों के कारण लोगों को अपनी आजीविका चलाने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती है।

(ख) लेखिका की पहाड़ी यात्रा गंतोक से यूमथांग जाने के लिए आरंभ होती है ।वह अपने पूरे दल के साथ जीप में बैठकर यात्रा शुरू करती है ।जैसे-जैसे जीप आगे बढ़ती हैं उन्होंने देखा कि हिमालय का प्राकृतिक दृश्य पल-पल में बदल रहा है। अब हिमालय अपने विशाल रूप में दिखाई देने लगता है । आसमान में घटाएं फैली हुई हैं। घाटियों में दूर-दूर तक खिले हुए फूल फैले हुए हैं। लेखिका हिमालय के चमत्कारी रूप को अपनी आत्मा में समेट लेना चाहती है । वह उसे दृश्य से एकात्मक हो जाती है। वह हिमालय को "मेरे नगपति""मेरे विशाल" कहकर सलामी देती है । हिमालय कहीं हरे रंग का कालीन ओढे नजर आता है।
कहीं सफेद बर्फ की चादर ओढ़े हुए। कहीं-कहीं बादल में लुका छुपी का खेल खेलते सा लगता है। लेखिका को पर्वत क्षेत्र जादू की छाया माया एवं खेल लगता है ।
तो कहीं लेखिका उसे देखकर गहन विचारों में डूब जाती है उसे वह परम सत्य का अनुभव होने लगता है।

(ग) 'मैं क्यों लिखता हूँ?' अज्ञेय जी का एक प्रसिद्ध निबंध है.लेखक ने इस निबंध में बताया है कि लेखक की भीतरी विवशता ही उसे लिखने के लिए मजबूर करती है और लिखकर ही लेखक उससे मुक्त हो पाता है। प्रत्यक्ष अनुभव जब अनुभूति का रूप धारण करता है, तभी रचना पैदा होती है। अनुभव के बिना अनुभूति नहीं होती, परंतु यह आवश्यक नहीं है कि हर अनुभव अनुभूति बने । लेखक ने अपने द्वारा रचित 'हिरोशिमा' कविता की रचना का उदाहरण देते हुए स्पष्ट किया है कि अनुभव जब भाव - जगत् और संवेदना का हिस्सा बनता है, तभी वह कलात्मक अनुभूति में रूपांतरित होता है।

खंड -ङ आदर्श जीवन मूल्य मध्यमा

प्रश्न .14 (क). वर्तमान भारतीय समाज में नारी का स्थान बहुमुखी और महत्वपूर्ण है। वह अब केवल घरेलू कार्यों तक सीमित नहीं है, बल्कि शिक्षा, राजनीति, व्यवसाय, और समाज के विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय रूप से भाग ले रही है. हालांकि, लैंगिक असमानता और सामाजिक दबाव जैसे कुछ मुद्दे अभी भी मौजूद हैं.

(ख) इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निश्चय ही कुछ भी नहीं है। योग-सिद्ध व्यक्ति (पवित्र अन्तःकरण होने पर) स्वयं ही इसको आत्मा में पा लेता है। इस ज्ञान की तलाश में मनुष्य आदिकाल से ही रहा है। यह आवश्यक नहीं कि यह ज्ञान हमें बड़ों से ही प्राप्त हो। यदि हमें अपने छोटों से भी ज्ञान मिले तो उसे प्राप्त करने में संकोच नहीं करना चाहिए। ऐसी ही एक

कथा है, जिसमें महाराजा जनक छोटे-से निशक्त (दिव्यांग) बालक अष्टावक्र से ज्ञान प्राप्त करते हैं।

(ग) उत्साहपूर्वक जीवन जीने से हमें यह लाभमिलता है कि हम जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति कर सकते हैं; चाहे पढ़ाई में अधिक अंक लाने की बात हो, किसी परीक्षा की तैयारी की बात हो अथवा अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की बात हो या अन्य कोई भी कार्य हो। यदि हम उसे उत्साह से करेंगे तो हमें उसमें अवश्य ही सफलता मिलेगी। प्रत्येक कार्य में सफलता के लिए उत्साह का होना अति आवश्यक है। अतः हमें प्रत्येक कार्य उत्साहपूर्वव करना चाहिए।

(घ) गीता के अनुसार, कर्म की सफलता के लिए कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग जैसे तत्त्व सहायक होते हैं। कर्मयोग का अर्थ है, बिना फल की इच्छा के कर्म करना। ज्ञानयोग का अर्थ है, ज्ञान के माध्यम से कर्म करना, और भक्तियोग का अर्थ है, परमात्मा को समर्पित होकर कर्म करना.